पेरेंट्स एंड फ्रैंड्स अॉफ लेसबियन्स एंड गेज (पी एफ एल ए जी) एक स्वयँ सेवी संस्था है जो स्टोनवॉल मानव अधिकार रैली के बाद सन् १९७९ में अमेरिका में बनी थी।

पी एफ एल ए जी का प्राथमिक उद्देश्य उन परिवारों की सहायता करना है जिन्हें अपने प्रियजनों की लैंगिकता को समझने में कठिनाई आ रही है।

हमें आशा है कि दी गई सूचना से अभिभावकों को वो परेशानी समझने में आसानी होगी जो उनके पुत्र या पुत्री को स्वयँ की यौन विविधता के बारे में हो रही है। एक अभिवावक के रूप में हम में जो भावनाएं या भय है, वैसी सभी में होती है परंतु कुछ लोगों में अपनी सँस्कृति के कारण ये भावनाएं तीव्र हो सकती हैं।

पी एफ एल ए जी ये मानता है कि प्रत्येक परिवार के अपने अलग मूल्य विश्वास व सिद्धांत होते हैं। पी एफ एल ए जी की ब्रिसबन शाखा की ये संक्षिप्त मार्गदर्शिका परिवारों को इस बात का विश्वास दिलाने की एक गाइड मात्र है कि उन भावनाओं को महसूस करने वाले वो अकेले नहीं हैं जो एक प्रियजन द्वारा अपने परिवार को स्वयँ के जीवन के इस महत्वपूर्ण हिस्से की सूचना देने पर आती है।

ये एक ऐसा समय होता है जब माता पिता ये मानकर अकेला महसूस करते हैं कि इस तरह के मुद्दे पर वे किसी से बात नहीं कर सकते। बहुत सी बार माता पिता ये सोचते हैं कि केवल उन्हीं के सामने ये समस्या आई है। खैर आँकड़ों के अनुसार हर पाँच में से एक परिवार में एक सदस्य गे या लेस्बियन होता है चाहे उन्हे ये बात पता हो या न हो चाहे वो किसी भी जाति, धर्म या सँस्कृति के हों।

जब बेटे बेटियां परिवार के सामने एक समलिंगी के रूप में शुरु शुरु में "सामने आते" हैं

अधिकाँश माता पिता को जब पहली बार बताया जाता है कि उनका बेटा या बेटी समलिंगी है तो उनमें बहुत सी भावनाएं उठती हैं जैसे :

- आघात - जो सुनते हैं उस पर विश्वास नहीं होता लगता है जैसे ये एक बुरा सपना है। ये एक ऐसा समय होता है जब आंखों से आंसुओं की झड़ी लग जाती है
- हताशा - हताशा के कारण कुछ माता पिता डिप्रेशन (अवसाद) में चले जाते हैं।
- दोषारोपण - सोचते हैं कि कहीं उन्हें अपने किसी पिछले पाप का दण्ड तो नहीं मिल रहा है।
- क्रोध - उनकी हमारे साथ ऐसा करने की हिम्मत कैसे हुई हम तो अच्छे माता पिता के रुप में रहे हैं।
- घृणा - ये नहीं समझ पाते की यौन संबंधों की एक स्थिति किसी के लिए साधारण है किसी के लिए नहीं।
- चकराना - अपने बच्चे को चुभने वाली बातें बोलकर बाद में पछताते हैं।
- ग्लानी - मान लेते हैं कि वे ही बुरे माता पिता थे उन्हें ऐसा होने ही नहीं देना चाहिए था।

- शर्म और चिंता - इस बारे में मित्रों व अन्य परिजनों से ये सोच कर कहने से डरते हैं कि फिर से उन्हें ही बुरा माता पिता माना जाएगा।
- उत्तरदायी - माता पिता एक दूसरे को दोषी ठहराते हैं। कभी माँ को नरम बताते हुए दोषी ठहराया जाता है कि उसने पर्याप्त अनुशासन नहीं रखा तो कभी पिता पर अनुपस्थित या कठोर होने का दोष लगता है। कभी कभी माता पिता इसके लिए स्वंय को ही जिम्मेदार मानते हैं कि वे इसे पहले ही पहचानकर रोक नहीं पाए।

अधिकाँश माता पिता उन कारणों को खोजते हैं जिनकी वजह से उनका बच्चा समलिंगी बना और जानना चाहते हैं कि "मेरा ही बच्चा क्यों ?" परंतु वास्तविकता ये है कि हम चाहे कितने भी अच्छे या बुरे माता पिता रहे हों, ना तो हमारे बच्चे स्वयँ को ना ही हम उनको गे या लेस्बियन होने से रोक सकते हैं, ऐसा कोई विकल्प या च्वाइस से नहीं करता।

अनुसंधान में पता लगा है कि ऐसा कोई भी प्रमाणित सिद्धात नहीं है जो ये बताए कि हम क्यों विलिंगी (हिट्रोसैक्सुअल) पैदा होते हैं इसी प्रकार इस बात के पीछे भी कोई प्रमाणित सिद्धांत नहीं है कि लोग समलिंगी क्यों पैदा होते हैं। माता पिता के रुप में हमें ये समझना होगा कि हमारे बच्चों ने समलैंगिकता को चुना नहीं है और कुछ बच्चों के लिए ऐसा जीवन बहुत ही कठिन होता है। वैग्यानिकों का कहना है कि ये कोई मानसिक रोग नहीं है, हांलाकि पहले ऐसा माना जाता था, वो कह रहे हैं कि ये तो विलिंगता (हिट्रोसैक्सुअलता) कि ही तरह एक प्राकृतिक रूपांतरण है। ये केवल एक स्थिती है जिसे हममें से अधिकाँश लोग समझ नहीं पाते।

अपने अपने जाति व धर्म के आधार पर कुछ लेस्बियन्स व गेज जानते हैं कि जब वे अपने परिवार को इस बारे में कहेंगे तो वे अपने माता पिता को निराश ही करेंगे। दुर्भाग्यवश कुछ अन्य डरते हैं कि उनकी पिटाई होगी या उन्हें परिवार से अलग कर दिया जाएगा और कभी इससे भी खराब। हममें से बहुतों के बेटे बेटियों के लिए ऐसा नाटक करना बहुत ही कठिन होता है कि वे वैसे ही हैं जैसा हम चाहते हैं यानि (हिट्रोसैक्सुअल हैं) कौन ऐसा जीवन जीना चाहेगा या इस तरह का खतरा उठाना चाहेगा ? इसलिए ये जानते हुए भी कि इसमें खतरा है उन्हें सच्चाई बतानी ही पड़ती है।

बहुत से माता पिता के लिए ये समझना कठिन होता है कि उनके बच्चे के साथ क्या हो रहा है, इसलिए वे कुछ समय शोक में बिताते हैं। ये सच्ची बात है क्योंकि बहुत से माता पिता इस चीज को ऐसे देखते हैं जैसे उनका जो बच्चा उनके पास था उसकी मृत्यु हो गई है और अब उनके सामने कोई अनजान खड़ा है।

माता पिता अपनी उस आशा के समाप्त होने का भी शोक मना लेते हैं जो उन्हें उनके बच्चे से थी, कि वो भी उनकी तरह परंपरागत रास्ते पर चल कर विवाह करेगा उसके भी बच्चे होंगे, और ये स्थिती हरेक के लिए कठिन हो सकती है।

वास्तव में, हमें ये पहचानना होगा कि, हमारा बेटा या बेटी बदले नहीं है वे अभी भी वो ही लड़का लड़की हैं बात केवल इतनी है कि वे अपने बारे में वो सच्चाई बता रहे हैं जो हम समझ नहीं पा रहे हैं।

बहुत से देशों में अल्पसँख्यकों के साथ होने वाले भेदभावों में से लेस्बियन व गेज के साथ होने वाला भेदभाव एक ऐसी बात है जिसे माता पिता व बच्चे आपस में नहीं बाँटते। अगर समाज में हमारे बच्चे के साथ धर्म या जाति के आधार पर भेदभव होता है तो माता पिता के रुप में हमें उनसे सहानुभुति होती है क्योंकि हम भी उन्हीं के समान होते हैं और हमारे साथ भी वैसा ही भेदभाव होता है परंतु सैक्सुअल आधार पर भेदभाव एक ऐसी चीज है जिसका सामना बच्चा अकेला करता है,इसका हमारे पुत्रों व पुत्रियों पर घातक प्रभाव पड़ सकता है।

हमारे बच्चों को हमारे सहयोग की आवश्यकता है माता पिता का प्यार शर्तों पर आधारित नहीं होना चाहिए।

हमें ये समझना होगा कि हमारे पुत्र और पुत्रियां समलिंगी होना चाहते नहीं हैं वे जानते हैं कि ऐसा करके वे कम से कम माता पिता को निराश तो करेंगे ही सबसे बुरी बात ये होगी कि माता पिता उन्हें अस्वीकार (रिजेक्ट) ही कर दें। साधारणतया किशोर किशोरियां अपनी लैंगिकता के बारे में परिवार को बताने से पूर्व खुद बहुत दिनों तक परेशान रहते हैं।

बहुत से किशोर बच्चे ये जानते हैं कि इस चीज से उनकी सँस्कृति व परिवार की प्रतिष्ठा पर आँच आएगी। कभी कभी आपके पुत्र या पुत्री को " सामने आने" के इस प्रारंभिक समय में सुरक्षित रखने व उनकी रक्षा के लिए भरोसे की आवश्यकता होती है।

अपनी इस समलैंगिकता को गुप्त बनाए रखने या परिवार को बताने पर होने वाले परिणामों के भय से बहुत से किशोर बच्चे डिप्रेशन का शिकार हो आत्महत्या की बात सोचने लगते हैं। कुछ परिवार द्वारा बहिष्कार के भय से, तो कुछ अपनी समलैंगिकता के कारण स्वयँ से अप्रसन्न हो ऐसा सोचने लग जाते हैं।

हो सकता है कि एक माता पिता के रुप में हम नहीं चाहें कि हमारा पुत्र पुत्री समलिंगी हो लेकिन हमें ये भी समझना होगा कि वे लोग भी समलिंगी होना नहीं चाहते। हमारे बच्चे शुरु शुरु में जब " सामने आते हैं " तो वे विसामान्य नहीं बन जाते ना ही वे अपने नैतिक या पारिवारिक मूल्यों को खोते हैं। वे ऐसे लोग नहीं हैं जिनसे डरा या दूर रहा जाए, ना तो उन्हें नीचा दिखाना चाहिए ना ही उनका मजाक बनाना चाहिए।

कुछ माता पिता चाहते हैं उनके बच्चे समलैंगिकता छोड़ दें। कई बार वे ऐसा इसलिए चाहते हैं ताकि वे अपने रिश्तेदारों व पड़ोसियों को मुहँ दिखा सकें और कभी कभी अपने व्यक्तिगत धार्मिक विश्वास के कारण वे इस प्रकार की इच्छा रखते हैं। पर क्या ये उचित है ? माता पिता को, खुद को अपने बच्चे की जगह पर रख कर सोचना चाहिए कि क्या वे अपनी स्वाभाविक लैंगिकता छोड़ कर समलैंगिक जीवन बिता पाएंगे ।क्या हम ऐसा कर सकते हैं ? मैं नहीं सोचती क्योंकि ऐसा करना हमारे लिए स्वाभाविक नहीं और ये असंगत लगेगा।

विलोमलैंगिकता सभी के लिए स्वाभाविक नहीं होती। सहज चीज छोड़ने के लिए कहना आसान है करना नहीं ये बहुत ही लंबा दुष्प्रभावकारी समय हो सकता है।

बहुत से लोगों का विश्वास है कि ५० वर्ष पहले जितने समलिंगी लोग थे, आज उससे अधिक हैं ये बात सही नहीं है। समलैंगिकता तो शुरु से ही विद्यमान है ये तो अब शिक्षा व लोगों के अपने आप के प्रति ईमानदार होने के कारण लोग ये बात बताने लगे हैं कि वे गे या लेस्बियन है।

समाज में ये बहुत ही मामूली बात है कि बहुत से लोग लेस्बियन या गेज के बारे में पहले से ही अपने विचार रखते हैं। जब उनके प्रियजन अपने बारे में ये बताते हैं कि वे क्या हैं तो इससे उनके मूल्यों व पुराने विचारों को चुनौती मिल सकती है और ऐसा होना बहुतों के लिए अपना सामना करना होता है। बहुत से परिवारों को अपने प्रियजनों को स्वीकार करने में काफी समय लग जाता है।

बच्चे के समलिंगी होने की स्थिती का सामना पिता कैसे करता है

इसके बारे में कुछ निश्चित नहीं है सभी पिता अलग अलग तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं कुछ सहयोगी होते हैं तो कुछ रो पड़ते हैं, भारी निराशा महसूस करते हैं या फिर अनुचित या अन्यायपूर्ण व्यवहार करते हैं। कुछ अन्य ऐसा नाटक करते हैं जैसे समलैंगिकता की बात आई ही नहीं हो। पिताओं के सामने माताओं से अलग प्रकार की समस्याएं आती हैं।

कुछ को लगता है :

- उनके अहम् को चोट पहुँची है
- उनमें कम पुरुषत्व है क्योंकि वे एक गे बच्चे के जनक हैं
- दूसरों पर आरोप की इच्छा
- लोग उनका मूल्यांकन स्वयँ करेंगे
- शर्म
- वे अपने बच्चे के लिए एक सकारात्मक रोल मॉडल नहीं बन पाए

हम सबको स्वीकृति चाहिए :

हमारी लेस्बियन पुत्रियों व गे पुत्रों को वैसे ही अनुमोदन की आवश्यकता होती है जैसी कि हमारे विलोमलिंगी बच्चों को। माता पिता को ये बात समझनी चाहिए कि अगर हम अपने बच्चों से प्यार व सम्मान चाहते हैं तो हमें उन्हें पूर्ण सम्मान देना होगा।

माता पिता के रुप में हमें जितना संभव हो उतनी ज्यादा जानकारी प्राप्त करनी चाहिए ताकि हम उन मुद्दों को समझ सकें जिनका सामना हमारे बच्चे कर रहें हैं। जब हमें ये कहा जाता है कि हमारे बच्चे समलिंगी हैं तो हमारे लिए उतना आसान नहीं होता और माता पिता के रुप में हम इस सूचना से पीड़ित हो रहें हैं। हमारे बच्चों के लिए ये जानना जरुरी है कि हम अब भी उन्हें प्यार करते हैं उनका ध्यान रखते हैं और साथ मिलकर हम बात बना लेंगे।

समझने के लिए हमें अपने बच्चे से बात करनी होगी और ऐसे प्रश्न पूछने होंगे जिनसे हमें माता पिता के रुप में उनकी बात समझने में सहायता मिले साथ ही हमें अपने पुत्र/ पुत्री को सच्चाई के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

कुछ सहायक प्रश्न :

- तुम्हें कब से पता है ?
- क्या तुमने अपने मित्रों को बताया है ?
- क्या "सामने आने" के बाद कोई तुम्हारे विरुद्ध हुआ है ?
- क्या तुम्हारा/ तुम्हारी पार्टनर है ? यदि हाँ तो कब से ?
- मैं उनसे कब मिल सकता/ सकती हूँ ?
- हमें कहने के बारे में तुम्हें किस बात की मुख्य चिंता थी ?
- क्या "सामने आना" उतना ही कठिन रहा जितना तुमने सोचा था ?
- तुम अपने लैंगिक रुझान के बारे में क्या बताना चाहते हो ?
- मैं तुम्हारी अधिक से अधिक सहायता कैसे कर सकता /सकती हूँ ?
- क्या मैं परिवार व मित्रों को ये बात बता सकता /सकती हूँ ?
- क्या तुम परिवार व मित्रों को बताने में सहायता करना चाहोगे/ चाहोगी ?
- ईमानदारी से हमें ये बात बताकर क्या तुम्हें और अच्छा लग रहा है ?
- एक लेस्बियन/ गे व्यक्ति के रूप में तुम अपने भावी जीवन को कैसे देखते हो ?
- तुम किस चिज को परेशानी के रूप में देखते हो, यदि कुछ है तो ?
- तुम्हें किन बातों का डर या चिंता है ?
- क्या तुम्हारा जीवन खुशी खुशी चल रहा है ?

जब अपने बच्चे से बात करें तो धीरज रखें और उन्हें हर प्रश्न का पूरा जवाब देने दें।

पहली बार बात करने में ही सारे प्रश्नों के उत्तर मिलने की अपेक्षा न रखें।

इस बात को समझें कि इसमें शामिल सभी पक्षों को शर्मिंदगी महसूस हो सकती है इसलिए संवेदनशील होने का प्रयास करें।

अपने बच्चे को ये बताएं कि आप इस चीज को समझ नहीं रहें हैं पर समझना चाहते हैं।

नकारात्मक टिप्पणियाँ नहीं करें वो जो कहना चाहते हैं उसे सुनें। एक माता पिता के रूप में आपके मन में उनके लिए चाहे नकारात्मक भावनाएं या संदेह आ रहा हो परंतु जहाँ तक संभव हो उन्हें इस बात का पता नहीं लगना चाहिए। इससे सहायता नहीं मिलेगी बल्कि संभवतः आपका पुत्र / पुत्री आपसे इस विषय पर बात करने से झिझकेंगे।

इस बात का ध्यान रखें कि किशोरवय लोग शुरु में निर्णय या अस्वीकृति के प्रति बड़े ही संवेदनशील होते हैं इसलिए ध्यान से रहें।

अन्त में, छाती से लगा अपने बच्चे को ये बताना कि आप उनसे बिना किसी शर्त के प्यार करते हैं उन्हें परिवार के साथ घनिष्ठता से जोड़े रखने में सहायक होगा।

ध्यान रखने योग्य व्यक्तिगत बात

एक गे पुरूष की जननी होने के नाते मैं ये समझती हूँ कि पूरी तरह स्वीकार करने व समझने में समय लगता है परंतु बच्चों के प्रति हमारा प्यार शर्तों पर टिका हुआ नहीं होना चाहिए। हमारे गे पुत्र को अनुमोदित कर मुझे ये पता लगा कि वो हमारे यानि उसके माता पिता के प्रति अपने उस विलोमलिंगी भाई से भी अधिक निष्ठावान व कृतग्य है जो अधिकारपूर्वक मानता है कि हमारा उसे प्यार करना व उसका सहयोग करना उसका हक है।

शैली अर्जेन्ट OAM